

मैं कुलवान

( १५ )

ओ मेरे प्यारे किशन ओ मेरे सर्वस्व धन

तुझ पे मैं कुलवान ॥

तेरे आंचल से जो आवे उस पवन को है प्रणाम

चूम लूं मैं उस जुबां को जिस पर आवे तेरा नाम

मधुर तेरी मुस्कराहट, मधुर मुरली की है तान ॥१॥

जिस भूमि पै पडत्रते तेरे चरण मेरे सुन्दर श्याम

वह भूमि मेरा पावन तीरथ वही है गौलोक धाम

रैन दिन तुमका ध्याऊं हर घड़ी करूं गुणनि गान ॥२॥

धन्य श्रीवृन्दाविपिन है धन्य श्रीयमुना की धार

धन्य धन्य कदम्ब कुंजे जिसमें होता नित्य विहार

दामिनी संग जैसे जलधर तैसे स्वामिनि संग तुम श्याम ॥३॥

धन्य बाबा धन्य मैया लाड़ लड़ावत रैन दिन

ललित लीला निरखि हर्षे पुष्प वर्षे सुर मुनि

धन्य मैगसि मैया तेरी आवती यश आठों याम ॥४॥